IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय शास्त्रीय संगीत का भविष्य

शोधनिर्देशक– डॉ सरिता पाठक

प्राध्यापक शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा म.प्र.

शोधार्थी – कल्पना सोनी

भारतीय शास्त्रीय संगीत–

शास्त्रीय संगीत, भारतीय संगीत का एक अभिन्न अंग है। शास्त्रीय संगीत, जो शास्त्र द्वारा बनाए गये नियमों द्वारा बँधा हुआ होता है, शास्त्रीय संगीत कहलाता है। शास्त्रीय गायन स्वर प्रधान होता है। इसमें स्वर का बहुत महत्व होता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को मार्गी संगीत भी कहते है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत हमारी भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। जो हर एक को हर लयात्मक धड़कन से जोड़ता है। जैसे–जैसे हमारा देश विकसित हुआ, शास्त्रीय संगीत भी इसके साथ विकसित हुआ है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शुरुआत – भारतीय शास्त्रीय संगीत एक समृद्ध परंपरा है जिसकी उत्पत्ति दक्षिण एशिया में हुई और अब यह विश्व के कोने–कोने में पाई जाती है। इसकी उत्पत्ति 6000 वर्ष पूर्व के पवित्र वैदिक ग्रंथों में हुई है, जहाँ मंत्रों के माध्यम से संगीतमय स्वरों और लयबद्ध चक्रों की एक प्रणाली विकसित हुई।

शुरुआत से ही, भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रकृति की गहराई से जुड़ा रहा है। जैसे कि प्रत्येक राग का गायन समय दिन रात के प्रहर और मौसम के अनुसार, निर्धारित किया गया । भारतीय शास्त्रीय संगीत की रचनाएँ निश्चित तथा तालबद्ध होती है, जिससे प्रदर्शन अनूठा बनता है।

भारत की समृद्ध धरोहर शास्त्रीय संगीत परम्परा में ज्ञान और कौशल आमतौर पर, मौखिक परम्परा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है, जहाँ छात्र अपने गुरु के साथ कई वर्षों तक बहुत ही खास आध्यात्मिक बंधन विकसित करते हैं, संगीत के सभी पहलुओं के साथ दार्शनिक और नैतिक सिद्धांतों को आत्मसात करते है। वर्तमान् समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत कई संस्थानों में सीखा जा सकता है और इसका व्यापक रूप में दस्तावेजीकरण किया गया है, फिर भी अवलोकन, सुनने व स्मृति के माध्यम से सीखना अभी भी महत्वपूर्ण व सर्वोपरि है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकास – भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक समृद्ध और आकर्षक इतिहास है, जिसका विकास परम्परा, नवाचार और बाहरी प्रभावों के निरंतर मिश्रण का प्रमाण है। 19 वीं सदी में भारतीय शास्त्रीय संगीत कला रूप के प्रति रुचि का पुनरुद्धार हुआ, और इसे संरक्षित रखने और सिखाने के लिए संस्थान स्थापित किए गए।

20 वीं और 21 वीं सदी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास के लिए नवीन रास्तों को अपनाया गया । संगीतकार फ्यूज़न शैलियों के साथ शास्त्रीय संगीत प्रयोग कर रहे हैं। कलाकार इलेक्ट्रॉनिक तत्वों को शामिल कर रहे हैं। शास्त्रीय संगीत के कलाकार अन्य परम्पराओं के कलाकारों के साथ सहयोग कर रहे हैं, जिससे यह कला रूप समकालीन दर्शकों के लिए जीवंत और प्रासंगिक बना हुआ है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकास अपनी जटिल धुनों, जटिल लयों और गहन भावनात्मक गहराई के साथ श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत हमें हमारी समृद्ध धरोहर से जोड़ने और शाश्वत भावनाओं को व्यक्त करने की शक्ति प्रदान करता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत लगातार विकसित हो रहा है। नए प्रभावों और समकालीन संवेदनाओं के अनुसार अनुकूलित हो रहा है, ताकि यह नए पीढ़ियों के लिए प्रासंगिक और आकर्षक बना रहे ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन का एक तरीका है। यह समुदायों को समृद्ध करता है। और हमें हमारे अतीत और वर्तमान से जोड़ता है इस प्रकार जीवन में संगीत आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए अंत्यंत आवश्यक है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी समृद्ध विरासत और विकसित होते स्वरूपो के साथ भविष्य में कायम रहने और फलने–फूलने के लिए तैयार प्रतीत होता है।

पंडित VN भातखण्डे द्वारा रचित क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग– 6)

वर्तमान में शास्त्रीय संगीत पर प्रभाव –

(1) टेक्नोलॉजी का प्रभाव

(2) फ्यूज़न और नवाचार

(३) युवाओं का आकर्षण

(4) सांस्कृतिक पहचान

(5) शिक्षण पद्धति में बदलाव

वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत अपनी पारंपरिक जड़ों को कायम रखते हुए तकनीकी और समकालीन प्रभावों के साथ विकसित हो रहा है। सोशल मीडिया, ऑनलाइन लर्निंग और फ्यूज़न संगीत के माध्यम से शास्त्रीय संगीत नई पीढ़ी में लोकप्रिय हो रहा है, जो मानसिक शांति और आध्यात्मिक पोषण का माध्यम बना हुआ है। यह अब केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है। अतः भारतीय शास्त्रीय संगीत अपने आध्यात्मिक और भावनात्मक महत्व के कारण आज भी अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत पर पड़ने वाले प्रभाव निम्न प्रकार है

(1) **टेक्नोलॉजी का प्रभाव** –आकाशवाणी (All India Radio) की तरह ही अब youtube spotity और Music Apps ने शास्त्रीय संगीत को आम लोगों तक पहुँचाया है। ऑनलाइन क्लासेस ने इसे वैश्विक बना दिया है।

(2) **फ्यूज़न और नवाचार** –शास्त्रीय संगीत को समकालीन संवेदनाओं के अनुसार ढाला जा रहा हैं जिसमें पश्चिमी वाद्ययंत्रों के साथ जुगलबन्दी (Fusion) लोकप्रिय हो रहा है।

(3) **युवाओं का आकर्षणः–** पारम्परिक घराना परम्परा के साथ– साथ, आधुनिक संगीत अकादमियों और ऑनलाइन गुरुओं के माध्यम से युवा पीढ़ी इस विद्या को सीख रही है। और युवाओं का आकर्षण शास्त्रीय संगीत को सीखने, समझने और सुनने में बढ़ता जा रहा है।

(4) **सांस्कृतिक पहचान–** शास्त्रीय संगीत को सुनना या गाना दोनों ही आनंद प्रदान करता है, आज की तनावपूर्ण दुनिया में शांति और सुकून का अनुभव कराता है, जिससे इसकी प्रासंगिकता बढ़ गई है।

शास्त्रीय संगीत शिक्षण पंडित तेजपाल सिंह www.sangeet galaxy.co.in

(5) **शिक्षण पद्धति में बदलाव–** भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा की शिक्षण पद्धति पर अब काफी बदलाव हुए हैं। और शास्त्रीय संगीत की शिक्षण पद्धति पर यह बदलाव डिजिटल नवाचारों का परिवर्तनकारी प्रभाव एक अनुकूलनीय और लचीली परम्परा का संकेत देता है, जो सीखने और सुलभता को बढ़ाने के लिए आधुनिक उपकरणों को अपनाती है। इसके अतिरिक्त राग एमएआई फ्रेमवर्क जैसी कृत्रिम बुद्धिमता के बीच बढ़ते अंतर्संबंध को दर्शाती है।, जिससे इसकी लोकप्रियता और समझ का दायरा संभावित रूप से बढ़ सकता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख चुनौतियॉ–

(1) पारंपरिक शिक्षा (गुरु–शिष्य परम्परा) का ह्रास ।

(2) नई पीढ़ी में धैर्य की कमी ।

(3) आर्थिक एवम् व्यवसायिक दबाव ।

(4) पाश्चात्य/ फ्यूज़न संगीत की ओर बढ़ता रूझान ।

(5) लोकप्रिय संगीत का प्रभाव।

(6) तकनीकी व्यवसायीकरण ।

(7) सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण ।

(1) **पारम्परिक शिक्षा (गुरु शिष्य परम्परा) का ह्रास –** पारंपरिक " गुरु–शिष्य"

परम्परा में, शिष्य–गुरु के सम्मुख बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे, जो कि गहन साधना के लिए जानी जाती थी । वर्तमान में शिक्षण पद्धति में बदलाव होने के कारण परम्परा का स्थान औपचारिक संस्थाओं ने ले लिया है, जिससे संगीत शिक्षा की गहराई कम हो रही है।

http://liberalarts.dpu.edu.in,	Dr. DY. Patil Vidyapeeth, pimri, pune

(2) **नई पीढ़ी में धैर्य की कमी–** शास्त्रीय संगीत में निपुणता के लिए वर्षों के रियाज की आवश्यकता होती है। परंतु नई पीढ़ी के कलाकार शिष्यों के पास समय का अभाव होता है साथ ही साथ वह तुरंत सफलता पाने की चाहत रखते हैं। तुरंत सफलता पाने की चाहत इसे एक बड़ी चुनौती बनाती है।

(3) **आर्थिक एवम् व्यवसायिक दबाव –** वर्तमान समय में अधिकांश उभरते हुए कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत को व्यवसाय के लिए अपनाया है, और उभरते हुए कलाकारों के लिए पूर्णकालिक करियर के रूप में शास्त्रीय संगीत को अपनाना वित्तीय रूप से चुनौतीपूर्ण है।

(4) **पाश्चात्य / फ्यूज़न संगीत की ओर बढ़ता रुझान –**उभरते कलाकारों का रुझान फ्यूज़न संगीत की ओर बढ़ रहा है, जिससे विद्यार्थी शास्त्रीय संगीत में अधिक मेहनत व रियाज नहीं करना चाहते। इसलिए पाश्चात्य संगीत की ओर बढ़ता रुझान शास्त्रीय संगीत के लिए चुनौतीपूर्ण है।

(5) **लोकप्रिय संगीत का प्रभाव –** पॉप रॉक और फिल्मी संगीत के दौर में युवा पीढ़ी शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मताओं से दूर हो रही है। जोकि शास्त्रीय संगीत के लिए एक चुनौतीपूर्ण विषय है।

(6). **तकनीकी व्यवसायीकरण–** डिजिटल युग में संगीत का व्यवसायीकरण होने से गुणवत्ता की बजाय, लोकप्रियता को प्राथमिकता मिल रही है।

(7). **सांस्कृतिक विरासत व संरक्षण–** पारंपरिक तकनीकों को संरक्षित करने और आधुनिकता को अपनाने के बीच संतुलन बनाए रखना, एक बड़ी चुनौती है। इसके अतिरिक्त आर्थिक अस्थिरता और डिजिटल युग में कला की गुणवत्ता से समझौता भी शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मताओं के लिए प्रमुख चिंताएं हैं। फिर भी इन सभी चुनौतियों के बावजूद भी ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षा (जैसे–वर्चुअल क्लासेस, You Tube) और तकनीकी एकीकरण से इसे नई पहचान मिली है। और आगे भी मिल रही है। और साथ ही यह कला रूप नए दर्शकों तक पहुँच रहा है, परंतु भारतीय शास्त्रीय संगीत एक समृद्ध विरासत और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाये रखना एक चुनौतीपूर्ण विषय हैं।

http://liberalarts.dpu.edu.in, Dr. DY. Patil Vidyapeeth, pimri, pune

भारतीय शास्त्रीय संगीत का भविष्य– शास्त्रीय संगीत, भारतीय संगीत का एक अभिन्न अंग है। भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति के मूल में बसी एक जीवंत कृति है, एक शक्तिशाली कला रूप जो आत्मा को छूती है। यह भारतीय संगीत आज की दुनिया में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। और व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर गहरा प्रभाव डालती है।

महान शास्त्रीय संगीत गायक पंडित जसराज़ शास्त्रीय संगीत के भविष्य के विषय में कहते हैं, कि –" यह विधा प्रतिभाशाली युवाओं के सुरक्षित हाथों में हैं जो इसे आगे ले जा रहे है। शास्त्रीय संगीत को आगे ले जाने के लिए प्रौद्योगिकी ने मदद की है। जसराज़ जी कहते हैं, कि– मैं तकनीक का शुक्रगुजार हूँ जिसके कारण शास्त्रीय संगीत का विस्तार अब कई गुना हो गया है।"

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का भविष्य उज्जवल है, लेकिन इसे AI तकनीक, ऑनलाइन शिक्षा के साथ सामंजस्य बिठाने और युवाओं को आकर्षित करने के लिए नवाचार की आवश्यकता है। हालांकि पश्चिमी संगीत का प्रभाव और पुरानी पीढ़ी के दिग्गज उलाकारों की कमी चुनौतीपूर्ण है, फिर भी इसकी जीवंतता, योग (संगीत चिकित्सा) और नए डिजिटल मंचों के माध्यम से यह ग्लोबल स्तर पर अपनी पहचान बनाए रख सकता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के भविष्य को लेकर प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है, :–

(1) तकनीकी एकीकरण

(2) ऑनलाइन शिक्षा एवम् पहुँच

(3) युवाओं की भागीदारी

(4) चुनौतियॉ और संरक्षण

(5) संगीत चिकित्सा

(1) **तकनीकी एकीकरण –** भविष्य में डिजिटल टूल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और वर्चुअल रियलिटी (VR) संगीत सिखाने और रागों के विश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

भारतीय शास्त्रीय संगीतः मनोवैज्ञानिक अयाम – डॉ साहित्य कुमार नाहर

(2) **ऑनलाइन शिक्षा और पहुँच–** ऑनलाइन प्लेटफार्म और शिक्षा के माध्यम से शास्त्रीय संगीत अब दुनिया भर के युवाओं तक आसानी से पहुँच रहा है। जो कि शास्त्रीय संगीत के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

(3) **युवाओं की भागीदारी–** भारतीय शास्त्रीय संगीत की विरासत को बचाए रखने के लिए एवम् इसके वैश्विक स्तर पर विकास के लिए युवाओं को न केवल सुनने, बल्कि सीखने और प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है जिसमें विद्यालयों में, महाविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत शिक्षा की भूमिका अहम है।

(4) **चुनौतियाँ और संरक्षण–** पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से इसे बनाए रखने के लिए सरकारी सहयोग, मीडिया कबरेज और प्रदर्शनों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

(5) **संगीत चिकित्सा–** शास्त्रीय संगीत के राग और ताल मानसिक स्वास्थ्य और वेलनेस (well&being) में मदद करते है, जिससे इसका महत्व और अधिक बढ़ रहा है।

यद्यपि भारतीय शास्त्रीय संगीत को तेजी से बदलती दुनिया का सामना करने वाली किसी भी परम्परा में निहित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी प्रमाण शास्त्रीय संगीत को एक गतिशील और स्थायी कला रूप का संकेत देते है। इसकी अनुकूलनशीलता, तकनीकी एकीकरण और निरंतर विद्वतापूर्ण और सांस्कृतिक रूचि के साथ मिलकर, इस धारणा का समर्थन करती है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत न केवल कायम रहेगा बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक परिदृश्य को विकसित और समृद्ध करना जारी रखेगा।

अतः इस प्रकार यदि भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह समृद्ध व प्राचीन कला समय की माँग के अनुरूप खुद को बदलती है तो आने वाली पीढ़ियों के लिए यह न केवल प्रासंगिक रहेगी बल्कि फलेगी– फूलेगी।

भारतीय शास्त्रीय संगीतः मनोवैज्ञानिक अयाम – डॉ साहित्य कुमार नाहर रोहित और अश्फाक 2023,

भारतीय शास्त्रीय संगीत की सुरक्षा एवम् प्रगति हेतु आवश्यक प्रयास

अगर किसी को ऐसी चीज का चयन करना हो जिसने भारतीय उपमहाद्वीप में आने वाले उन लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया हो जो इसकी विशिष्टताओं से परिचित नहीं थे, तो वह निश्चित रूप से. भारतीय शास्त्रीय संगीत होगा। यह कला समय के साथ–साथ जीवित रही है, विकसित हुई है और रुपांतरित हुई है। तो अब यह देखना बाकी है। कि क्या भारतीय शास्त्रीय संगीत और इसकी सभी पेशकशें इस गति को बनाए रख पाएंगी ?

वर्तमान समय में युवा भारतीय पश्चिमी संगीत सुनना अधिक पसंद करते है, और पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय संगीत सुनने या बजाने में रुचि रखने वाले लोगों की संख्या में कमी होती जा रही है। जैसे–जैसे राष्ट्र के दिलों को मोह लेने वाले दिग्गज कलाकार इस दुनिया से विदा हो रहे है, यह सवाल मन में उठता है कि क्या भारतीय शास्त्रीय संगीत, जिसे दुनिया ने इतना प्यार दिया था, आज भी या आने वाले समय में श्रोताओ को मंत्रमुग्ध कर पायेगा?

यदि भारतीय शास्त्रीय संगीत भविष्य में अपनी जगह बनाए रखना चाहता है तथा आगे भविष्य में पारंपरिक जड़ों को कायम रखना चाहता है तो भारतीय शास्त्रीय संगीत को भविष्य में फलने–फूलने और जन–जन में संगीत के प्रति रुचि जाग्रत करने हेतु हमें निम्न प्रयास किए जाने चाहिए –

(1) भारतीय शास्त्रीय संगीत भविष्य में अपनी जगह कायम रखे, इसके लिए यह आवश्यक है। कि भारत सरकार, निजी संगठन और आम जनता इसे आर्थिक रूप से सहयोग देना जारी रखें।

(2) भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुनहरे भविष्य हेतु मीडिया, विशेषकर रेडियो और टेलीवीजन स्टेशनों को संगीत की इस सुंदर शैली को उचित कवरेज देना जारी रखना चाहिए ।

शास्त्रीय संगीत शिक्षण पंडित तेजपाल सिंह शोध निर्देशक डॉ सरित पाठक जी के द्वारा प्राप्त जानकारी– 18/03/2026

(3) भारतीय शास्त्रीय संगीत के पुनरुद्धार हेतु विश्वविद्यालय भी व्याख्यान आयोजित करके और उभरते एवम् प्रतिष्ठित संगीतकारों को मंच प्रदान करके भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुनहरे भविष्य हेतु अपनी अग्रणी भूमिका निभा सकते है।

(4) भारतीय शास्त्रीय संगीत के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है। कि विश्वभर के युवाओं, बच्चों को न केवल संगीत सुनने बल्कि इसका प्रदर्शन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाए ।

(5) विद्यालयों में भी इस क्षेत्र में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए इसके लिए संगीत को एक अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में रखना चाहिए। और साथ ही साथ प्रदर्शन विद्यालय भी स्थापित किये जाने चाहिए।

इस प्रकार इन सभी प्रयासों के द्वारा भारत की संगीत विरासत को संरक्षित किया जा सकता है।

निष्कर्ष–

शास्त्रीय संगीत का अंत नहीं हैं, बल्कि यह समय के साथ बदल रहा है। यह आज भी समकालीन फिल्मी गीतों और संगीत को गहराई व भावनात्मकता प्रदान कर रहा है। डिजिटल युग ने संगीत शिक्षा और प्रसार को आसान बना दिया है। वर्चुअल क्लासरूम, और ऑनलाइन मंच से यह अब दुनिया भर में सुलभ हो रहा है। फ्यूज़न संगीत पारम्परिक रागों को आधुनिक बना रहा है। साथ ही शास्त्रीय संगीत मानसिक स्वास्थ्य, एकाग्रता और चिकित्सा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पारंपरिक वाद्ययंत्रों और गुरु–शिष्य परम्परा को बनाए रखने के लिए सरकारी और व्यक्तिगत प्रयासों को पूरी लगन से किया जा रहा है।

अतः इस प्रकार शास्त्रीय संगीत एक जीवित और विकसित होती परम्परा है, जो अपनी शुद्धता (आत्मा) को बचाते हुए आधुनिक युग के साथ या भविष्य में सामंजस्य ही नहीं बिठाएगी, बल्कि भविष्य में शास्त्रीय संगीत की छवि, खूबी और भी निखर कर सामने आयेगी। अतः शास्त्रीय संगीत का भविष्य बहुत ही उज्जवल है। साथ ही अनुकूलन शील, है, जो परम्परा और तकनीक के मिश्रण के साथ विकसित हो रहा है।

http://discovery.researcher.life,

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्म्स के माध्यम से शास्त्रीय संगीत की पहुंच वैश्विक हो गई है। शास्त्रीय संगीत में शिक्षा और करियर बढ़ रहे हैं। शास्त्रीय संगीत और लोकप्रिय संगीत एक दूसरे के पूरक बन रहे है।

निष्कर्षतः भारतीय शास्त्रीय संगीत भारत की सांस्कृतिक विरासत या सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है। युवा पीढी के बीच बढ़ते हुए रुझान, डिजिटल मीडिया के माध्यम से प्रसार और मानसिक शांति के लिए बढ़ते महत्व के कारण यह अपनी प्रासंगिकता बनाए रखेगा ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का भविष्य तकनीक के साथ तालमेल बिठाकर अपनी मौलिकता को बनाए रखेगा। शास्त्रीय संगीत बदलते दौर के साथ खुद को ढालकर फलता– फूलता रहेगा। और लोकप्रिय संगीत के साथ मिलकर यह अस्तित्व बनाकर नई ऊंचाइयों को छुयेगा, अतः इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत का भविष्य उज्जवल है, जो अपने कार्यक्रमो व पेशकशों में केवल अपने भारत मे ही नही बल्कि विश्वभर में चार चॉद लगाएगा।

http://discovery.researcher.life,